"भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव : मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के एक गाँव का नृजातीय अध्ययन"

(Impact of Globalisation on the Bhilala Tribe: An Ethnographic Study of a Village in Alirajpur District of Madhya Pradesh)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से
समाजशास्त्र विषय में पीएच0डी0 की
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–सारांश

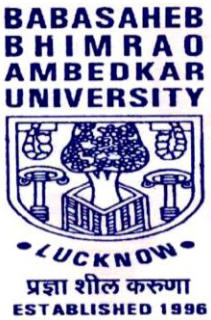

डॉ0 जया श्रीवास्तव
(शोध निर्देशक)

दिलीप सिंह राठड़िया
(शोध छात्र)

नामांकन सं0

–210/11

समाजशास्त्र विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

2017

सारांश

वर्तमान समाज वैश्वीकरण से निर्देशित हैं। वैश्वीकरण एक बहुआयामी एवं वृहद सामाजिक प्रक्रिया है। वैश्वीकरण से तात्पर्य, विभिन्न राष्ट्रों के मध्य वस्तुओं, सेवाओं, व्यक्तियों, पूँजी, संस्कृति एवं सूचना तकनीक के स्वतन्त्र प्रवाह से है। इस प्रक्रिया का विश्व के विभिन्न देशों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र पर अत्यन्त द्रुतगति से प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण समाज को वैश्विक, क्षेत्रीय, एवं स्थानीय स्तर पर प्रभावित करती है। कुछ विचारकों के अनुसार, वैश्वीकरण **एक आर्थिक अवधारणा एवं प्रक्रिया** मात्र है। इनके अनुसार यह विश्व के विभिन्न देशों के मध्य व्यापार, तकनीकी, श्रम एवं अन्तराष्ट्रीय पूँजी की परस्पर आर्थिक अन्तः निर्भरता है। कुछ विचारक इसे **शुद्ध राजनैतिक प्रक्रिया** मानते हैं। इनके अनुसार राष्ट्रीय समाज के विचार, आदर्श एवं मूल्य को अर्न्राष्ट्रीय समुदाय से एकीकृत करना है जबकि कुछ विद्धवान वैश्वीकरण को **सांस्कृतिक आदान–प्रदान** के संदर्भ में देखते हैं। इनके अनुसार, वैश्वीकरण से तात्पर्य संसर की विभिन्न मौलिक संस्कृतियों को प्रतिस्थापित कर एक सार्वभौमिक संस्कृतिक की स्थापना करना है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एंथनी गिडेन्स (2001) का कहना है कि **वैश्वीकरण केवल एक आर्थिक प्रक्रिया नही है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के एक समुच्चय से संबंधित है।** सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी क्रान्ति वैश्वीकरण की प्रक्रिया का एकमात्र प्रेरक कारक है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने सुगम एवं तीव्र बनाया है। सूचना एवं संचार प्रौद्यागिकी के साधनों में टेलीफोन, टेलीविजन, मोबाईल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं यातायात के अत्याधुनिक साधन यथा हवाई जहाज, बुलेट ट्रेन, हाई स्पीड गाड़ियां इत्यादि प्रमुख है। इन साधनों ने सम्पूर्ण विश्व में समय (time) एवं क्षेत्र (space) के दूरीकरण (distanciation) को तकरीबन अत्यन्त कम कर दिया है। **एन्थोनी गिडेन्स** (1990) का कहना है कि वैश्वीकरण में समय (time) और स्थान (space) को सामाजिक जीवन में नये सिरे से परिभाषित किया गया है। **गिडेन्स** इसे समय–स्थान दूरीकरण (जपउमे.चंबम कपेजंदबपंजपवद) कहते है। उनकी परिभाषा **''विभिन्न क्षेत्रों के बीच में बढ़ती हुई पारस्परिकता ही वैश्वीकरण हैं। यह पारस्परिकता सामाजिक और आर्थिक संबंधों में होती है। इसमें समय और स्थान सिमट जाते हैं''।** आज कि दुनिया में संचार और उत्पादन तथा विनिमय की जो जटिल विश्वव्यापी व्यवस्था बनी है उसने सम्पूर्ण स्थानियता को कमजोर कर दिया है। थॉमस फ्रिडमेन (2005) ने भी अतीत के वैश्वीकरण की अपेक्षा वर्तमान समय के वैश्वीकरण को बहुत आगे, तेज, सस्ता एवं गहन (intensive) माना है। **गिडेन्स** (1990) ने कहा है कि **''विश्व व्यापी आधार पर सामाजिक संबंधों को घनिष्ट बनाने का नाम ही वैश्वीकरण है।''** वैश्वीकरण एक प्रकार से दुनिया भर के लोगों के सामाजिक संबंधों का एक ताना बाना है। वैश्वीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें भौगोलिक दबाव कमजोर हो गये हैं और इसी तरह सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों की जमावट भी ढ़ीली पड़ी है।

वैश्वीकरण की अवधारणा नई नहीं है। इसका प्रारम्भ 16 वीं शताब्दी से ही है। कुछ विद्ववानों के अनुसार इसकी शुरूआत सन् 1940 के बाद पूंजीवाद के द्वारा गति पकड़ने के साथ हुई है। वैश्वीकरण की अवधारणा 1990 के प्रारम्भिक वर्षों में आई। इससे पहले यानी 1990 तक दुनिया की प्रमुख भाषाओं के किसी भी शब्दकोष में वैश्वीकरण पद का प्रयोग नहीं हुआ। मगर, अब समाज विज्ञानों में सार्वभौमिकता के स्थान पर वैश्वीकरण आ गया है। **वेलरस्टेन** (1983) ने अपनी

पुस्तक में कहा है कि वैश्वीकरण का जनक पूँजीवाद ही हैं। पूँजीवाद में एक खास प्रकार की ऐतिहासिकता है जिसमें यह अपने उत्पादन को समय और स्थान के साथ बांध लेता है। वे कहते है कि पूंजीवाद अनिवार्य रूप से वैश्विक है। इसका उद्गम 16 वीं शताब्दी में हुआ और तब से आज तक इसने अपना विस्तार वैश्विक स्तर पर ही हुआ हैं। अपनी वैश्विक प्रकृति के कारण पूँजीवाद कभी भी किसी स्थान विशेष में जुड़ा नहीं रहा है। यह हमेशा सार्वभौमिक रहता है। कई लोग वैश्वीकरण को पूंजीवाद की विस्तारवादी और शोषक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति मानते हैं जिसमें इन्टरनेट, मोबाईल फोन, टेलीविजन आदि की बड़ी भूमिका है।

ओहमे (Ohmae: 2002) आर्थिक जगत में 'सीमाविहीन विश्व (borderlesss world) के अस्तित्व की बात करते हैं। यह विचार बताता है कि लोग वैश्विक बाजार से बहुत तेजी से जुड़ते (Integrated) जा रहें हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था वाण्ज्यि, व्यापार एवं उत्पादन के बढ़ते अन्तराष्ट्रीय जाल के कारण तेजी से विराष्ट्रीकृत (denationalise) हो रही है। इस प्रकार यह स्थापित किसा जाता है कि वर्तमान समय में वैश्वीकरण अनिवार्य एवं अपरिहार्य है (Friedman: 2005)। मार्टिनेली (Martinelli: 2003) का मानना है कि अंर्तमहादेशीय एवं अंर्तप्रदेशीय (transnational and transregional) प्रवाह एवं क्रियाकलापों के जाल के कारण स्थानिक संगठनों (spatial organisations) में गहरा बदलाव हो रहा है। साथ ही मार्टीनेली यह भी कहते हैं कि वैश्वीकरण असमानता के पुराने प्रतिमानों (old patterns of inequalities) को पुनःस्थापित करता है एवं विश्व के प्रायः सभी क्षेत्रों में एक नये प्रकार के समाजिक संस्तरणों का निर्माण करता है। जिस कारण समाज में अन्तःकरण एवं बहिष्करण (inclusion and exclusion) के परम्परागत प्रतिमान पुनःस्थापित हो रहें हैं। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि वैश्वीकरण के कारण लोगों के जीवन शैली एवं उपभोग कि प्रगति में सजातीयकरण (homogenisation) हो रहा है। परन्तु साथ ही यह भी देखा गया है कि सांस्कृतिक विशेषताओं का हाईब्रिडाइजेशन एवं स्थानीय विशेष अस्मिताओं का संरक्षण भी तेजी से बढ़ रहा है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण में दो परस्पर विरोधी प्रक्रियायें साथ–साथ काम करती हैं एक प्रक्रिया सजातीयकरण (Homogenization) की है और दूसरी विभेदीकरण (Differentiation) है। इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रक्रिया में स्थानीयकरण (Localization) और वैश्वीकरण (Globalization) दोनों समानान्तर चलती है। इसने समय एवं स्थान कि दूरी को कम कर दिया है, क्योंकि इलैक्ट्रॉनिक संचार (Electronic communication) एवं सूचना प्रोद्यौगिकी ने सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में बांध दिया है जिससे यह समाचार पल भर में दुनिया भर के लोगो को पहुँचा देता है अर्थात वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वर्तमान ज्ञान एवं तकनीक आधारित समाज में नये इलेक्ट्रॉनिक एवं संचारी (communicational) अंर्तक्रियाओ को वैश्वीकरण के प्रभाव के संदर्भ में **सिल्वीया, वेल्बी** (2009) ने अपनी पुस्तक **''ग्लोबेलाइजेशन एन्ड इनइक्वलिटी : कम्पलेक्सिटी एन्ड कानटेस्टेड माडरनिटी''** में लिखा है कि वैश्वीकरण वैश्विक पूंजी का आगमन, व्यापार एवं व्यक्तियों का आदान–प्रदान, वैश्विक वाणिज्यक एवं गवर्नेन्स संस्थाओं का आपसी लेन–देन है। वैश्विक प्रक्रियाओं का प्रभाव व्यक्ति, स्थान एवं सामाजिक प्रस्थिति के अनुसार

भिन्न–भिन्न है। वैश्विक प्रक्रियाओं का प्रभाव न केवल आर्थिक एवं राजनैतिक ही नहीं बल्कि आंदोलन एवं सिविल सोसाइटीज़ के रूप मे भी सामने आया है।

अतः उपरोक्त अवधारणात्मक पृष्ठभूमि के आधार पर प्रस्तुत शोध में भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। इसके लिए मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले के लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के लोगों का नृजातीय अध्ययन (Ethnogaphic Study) किया गया। इस अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया है कि भीलाला जनजाति के लोगों की प्रस्थिति पर नवीन सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार से प्रेरित वैश्वीकरण का कितना प्रभाव पड़ा है।

जनजातियों के अस्तित्व का आधार कृषि एवं वन हैं। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि एवं वन पर आधारित होती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के पूर्व भारत में कृषि एवं कृषि से संबंधित व्यवसायों को संरक्षण प्राप्त था, जिससे जनजातीय किसानों का कृषि के सहारे अपनी असमर्थता के बावजूद भी भरण–पोषण हो जाता था। कृषि का तीव्र विकास अत्यावश्क है। सरकार का मानना है कि राष्ट्रीय कृषि नीति सभी वर्गो के उत्थान में सहायक होगी। यह कृषि के दीर्घकालीन विकास, नयी कृषि समुदाय के जीवन स्तर में सुधार एवं मजबूत राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण में सहायक होगी। परन्तु यह जानना आवश्यक है कि वास्तव में आर्थिक सुधार कार्यक्रम के तीन घटकों –उदारीकरण (Liberalization), निजीकरण (Privatization) एवं वैश्वीकरण (Globalization) का भीलाला जनजाति के कृषि क्षेत्र पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन में राष्ट्रीय कृषि नीति की व्यवहारिक एवं वास्तविक पहलुओं एवं कृषि क्षेत्र में हुए विकास पर दृष्टिपात किया जाना है। यह सत्य है कि आर्थिक सुधारों के परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण के तहत कृषि क्षेत्र के पूर्व की नीतियों में अनेक सुधार किये गये, जिसका कृषि क्षेत्र एवं अंततः जनजातियों (छोटे और सीमांत कृषकों) के अस्तित्व पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पडा है।

किस प्रकार भीलाला लोग अपनी देशीय संस्कृति (indegenous culture) यथा– समाज की परम्पराएं, रीति–रिवाज, खान–पान, वेश–भूषा, रहन–सहन, संस्कार, संस्कृतिक कला, नृत्य, गायन, गीत–संगीत, वाद्य–यंत्र, खेल–कूद, विश्वास–अविश्वास, जादू–टोना, मान–सम्मान, आचार–विचार, रिश्ते–नाते इत्यादि को छोड़कर वैश्विक संस्कृति को अपना रहे हैं। भीलाला जनजाति समूह के लोग वैश्वीकरण के कारण अन्य लोगों के सम्पर्क में आने लगे हैं। तथा समाज में अपने प्रस्थिति को उच्च करने के लिए अपना परम्परागत व्यवसाय (कृषि) छोड़कर दूसरा व्यवसाय अपना रहे हैं। जिसके लिये अपने गांव से दूसरे गांव, जिले एवं राज्य में पलायन कर रहें हैं। जिन लोगों ने अपने जीवनकाल में रेल तक नहीं देखे थे आज वे यातायात के आधुनिक साधन रेलगाड़ी एवं वायुयान में भी बैठने लगे हैं। ये अपने आर्थिक जीवन में वस्तु–विनिमय (Barter System) के स्थान पर मुद्रा का प्रयोग करने लगे हैं। वैश्वीकरण मुख्यतः पूँजीवादी एवं बाजार आधारित अर्थव्यवस्था से निर्देशित है। जिस व्यक्ति के पास पूँजी अधिक है, उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रस्थिति भी उच्च होती है तथा समाज में मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा होती है। प्रस्तुत शोध में भीलाला जनजाति के लोगों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का सामान्य (broad) उद्धेश्य भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना है। इस संबंध में इसके विशिष्ट (specific) उद्धेश्य इस प्रकार हैं –

1. भीलाला जनजाति के सामाजिक–आर्थिक जीवन (विशेषकर कृषि, आय, सम्पत्ति (assets), सामाजिक स्थिति) पर वैश्वीकरण (निजीकरण एवं उदारीकरण) के प्रभाव का विश्लेषण करना।

2. भीलाला जनजाति के सामाजिक विकास के क्षेत्र (विशेषतः शिक्षा एवं स्वास्थ्य) में वैश्वीकरण संबंधी नीतियों के प्रभाव का आकलन करना।
3. भीलाला जनजाति की जीवन शैली (विशेषतः भौतिक वस्तुएं, वेश–भूषा, खान–पान), सामाजिक संबंधों एवं नवीन जन संचार माध्यम (टेलिविजन एवं मोबाइल फोन) के प्रभाव को जानना।

4. वर्ग, लिंग, उम्र, शिक्षा एवं राजनीतिक प्रस्थिति के आधार पर भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध–प्रविधि

अध्ययन का क्षेत्र एवं निदर्शन (Universe of the Study and Sample):

इस शोध में मध्यप्रदेश के **अलीराजपुर जिले के भीलाला जनजाति के एक गाँव लक्ष्मणी** का अध्ययन किया गया है।

नृजातीय अध्ययन के अध्ययन क्षेत्र (Universe of the study) अलीराजपुर जिले का परिचयः

मध्यप्रदेश के अलीराजपुर जिले का गठन 17 मई 2008 हुआ है। कुल ग्रामों की संख्या 551 है। अलीराजपुर जिले में कुल पाँच तहसील है–अलीराजपुर, जोबट, चन्द्रशेखर आजाद नगर (भाबरा), कट्ठिवाड़ा, एवं सौण्ड़वा है। कुल 6 विकासखण्ड हैं– अलीराजपुर, जोबट, चन्द्रशेखर आजाद नगर, कट्ठिवाड़ा, सौण्ड़वा एवं उदयगढ़ है। यह जिला म.प्र. के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है, जो आदिवासी बाहुल्य जिला हैं। अलीराजपुर जिला दो राज्यों की सीमाओं से लगा हुआ है–पहला गुजरात जो कि अलिराजपुर जिले के पश्चिम् में अवस्थित है एवं दूसरा महाराष्ट्र जो की अलीराजपुर जिले के दक्षिण दिशा में अवस्थित है साथ ही मध्यप्रदेश के तीन जिलो की सिमाओं से लगा हुआ हैं–पहला, झाबुआ जिला जो कि अलीराजपुर जिले के उत्तर दिशा में अवस्थित है, दूसरा, धार जिला जो कि अलीराजपुर जिले के पूर्व में अवस्थित है, एवं तीसरा, बडवानी जिला जो कि अलीराजपुर जिले के दक्षिण–पूर्व में अवस्थित है। यहां पुलिस अनुभाग 02, पुलिस थाने 12, पुलिस चौकी 10 है। नगरपालिका 1. अलीराजपुर, नगर पंचायत 02 भाभरा एवं जोबट, जनपद पंचायत 06, ग्राम पंचायत 288, महाविद्याालय 04 अलीराजपुर, जोबट, भाभरा एवं सोण्डावा। स्वास्थ्य

केन्द्र में जिला स्वास्थ्य केन्द्र 01, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र 06, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 12 एवं उप स्वास्थ्य केन्द्र 159 है।

अलीराजपुर जिला जनजातीय बाहुल्य जिला है जिसमें 87 प्रतिशत् जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की निवास करती है जो कि इस जिले में सबसे अधिक है। अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत् भील, भीलाला, बारेला एवं पटलिया प्रमुख है इसमें भी सबसे अधिक भीलाला जनजाति के लोग ही निवास करते हैं। अनुसूचित जाति के केवल 4 प्रतिशत् लोग ही निवास करते हैं अनुसूचित जाति के अन्तर्गत् धानुक एवं कोटवाल समुदाय के लोग निवास करते हैं।

भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, जिला **कुल 3182.00 वर्ग किमी में फैला** हुआ है, जिसमें कुल 728,999 लोग निवास करते हैं जिसमें पुरूषों की आबादी 362,542 एवं महिलाओं की आबादी 366,547 है। जिले की शहरी जनसंख्या 57,074 है, जिसमें कुल शहरी पुरूष 28,949 एवं शहरी महिलाएं 28,125 निवासरत है। जिले की ग्रामीण आबादी 671,925 है, जिसमें कुल ग्रामीण पुरूषों की आबादी 333,593 एवं कुल ग्रामीण महिलाओं की आबादी 338,332 है। जिले में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 648,638 है जिसमें कुल पुरूषों की जनसंख्या 321,842 है तथा जबकि महिलाओं की जनसंख्या 326,796 है। जिले में कुल ग्रामीण अनुसूचित जनजातीय लोगों की जनसंख्या 627,835 है जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 311,307 है तथा महिलाओं की जनसंख्या 316,528 है। जिले में कुल शहरी अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 20,803 है जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 10535 है तथा महिलाओं की जनसंख्या 10,268 है।

भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, जिले में **कुल घरों की संख्या** 123,034 है जिसमें संस्थागत 520 एवं बेघर 246 है। जिसमें से अनुसूचित जनजाति के कुल घरों की संख्या 108,758 है जो कि जिले के कुल घरों की संख्या का 88.39 प्रतिशत् है। जिले में कुल अनुसूचित जनजाति के घरों की संख्या में से ग्रामीण अनुसूचित जनजातियों के घरों की संख्या 104,870 है जो कि कुल अनुसूचित जनसंख्या का 96.43 प्रतिशत् है, जबकि शहरी अनुसूचित जनजाति के घरों की संख्या 3,888 है जो कि कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का 3.57 प्रतिशत् है।

भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, जिले का कुल **लिंगानुपात** 1011/1000 है जो कि राज्य 931 की अपेक्षा अधिक है जो कि राज्य के कुल लिंगानुपात से प्रति हजार पुरूषों पर 80 महिलायें अधिक है। इस जिले का कुल शहरी लिंगानुपात 972/1000 है जो कि राज्य के लिंगानुपात 918/1000 की अपेक्षा अधिक है जो कि राज्य के लिंगानुपात से जिले में प्रति हजार पुरूषों पर 54 महिलाओं की संख्या अधिक है। तथा जिले का ग्रामीण लिंगानुपात 1014/1000 है जो कि राज्य के लिंगानुपात 936/1000 से अधिक है जो कि कुल राज्य के कुल ग्रामीण जनयंख्या से प्रति हजार पुरूषों पर 78 महिलायें अधिक है। इस जिले में लिंगानुपात का अधिक होने का मतलब यह है कि इसमें महिलाओं को भी पुरूषों के समान महत्व दिया जाता है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, जिले के कुल जनसंख्या घनत्व 229 प्रति वर्ग किमी है जो कि राज्य के कुल जनसंख्या घनत्व 236 प्रति वर्ग किमी से कम है।

भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, अलीराजपुर जिले की **कुल साक्षरता दर** 36.10 प्रतिशत् है जो कि राज्य की कुल साक्षरता दर 69.32 प्रतिशत् से लगभग आधी है। इस जिले का साक्षरता दर में स्थान राज्य में 50वा है। जिले में कुल पुरूषों की साक्षरता दर 40.02 प्रतिशत् है जो कि राज्य में कुल पुरूषों की साक्षरता दर 78.73 प्रतिशत् से लगभग आधा ही है एवं जिले में महिलाओं की साक्षरता दर 30.29 प्रतिशत् है जो कि राज्य में कुल महिलाओं की साक्षरता दर 59.24 प्रतिशत् से भी लगभग आधा ही है। अर्थात् इस जिले में साक्षरता दर राज्य की साक्षरता दर से आधी है जो कि बहुत ही दयनीय स्थिति को प्रदशित करती है इस पर शासन को जोर देने की आवश्यकता है।

भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार, जिलें में **अनुसूचित जनजातियों की कुल साक्षरता दर** 88.98 प्रतिशत् है जबकि राज्य में अनुसूचित जनजातियों की कुल साक्षरता दर 21.09 है। जिले में कुल पुरूषों की कुल साक्षरता दर 88.77 प्रतिशत् है जबकि राज्य में कुल पुरूषों की साक्षरता दर 20.52 प्रतिशत् है। जिले में कुल महिलाओं की साक्षरता दर 89.18 प्रतिशत् है जबकि राज्य में कुल महिलाओं की साक्षरता दर 21.7 प्रतिशत् है। अनुसूचित जनजाति के लोगों की साक्षरता दर में इस जिले में अन्य समुदाय के लोगों की स्थिति अपेक्षाकृत ठीक है।

इस जिले के कुल गाँवों की संख्या 543 है जिसमें 538 गाँवों में लोग बसे हुए है एवं 5 गाँव गैर–आबाद है अर्थात इन गाँवों में कोई भी व्यक्ति निवास नहीं करता है। अलीराजपुर जिले का क्षैत्रफल 2,68,9,58 हेक्टेयर हैं जिले की कुल जनसंख्या 7,28,677 लाख है, जिसमें कुल पुरूष जनसंख्या 3,62,748 लाख हैं एवं कुल महिला जनसंख्या 3,65,929 लाख है। इसका लिंगानूपात 1009/1000 पुरूष है, एवं साक्षरता दर मात्र 37.20ः हैं, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 43.58ः है एवं महिला साक्षरता दर 30.97ः है तथा जनघनत्व 229 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हैं भारतीय जनगणना (2011)

नृजातीय अध्ययन के निदर्शन (Sample) 'लक्ष्मणी गांव' का एक परिचयः

लक्ष्मणी गांव का ऐतिहासिक परिचयः

मुनि जयंतविजय 'मधुकर' के अनुसार, लक्ष्मणी गांव का नाम एक प्राचीन जैन तीर्थ श्री लक्ष्मणीजी के नाम से पड़ा। जो विक्रम की सोलहवीं सदी में तीर्थ विद्यमान था। कतिपय प्रमाण लेखों से इस तीर्थ की प्राचीनता कम से कम दो हजार वर्षों से भी अधिक पूर्वकाल की सिद्ध होती है। जब लक्ष्मणी गांव के निकट का गांव माण्डवगढ़ पर यवनों ने अधिकार किया तब इस तीर्थ स्थल पर भी यवनों ने आक्रमण किया और यहां के मंदिरादि तोड़ना प्रारम्भ किया। इस प्रकार यावनों के आक्रमण के कारण यह तीर्थ पूरी तरह नष्ट हो गया और विक्रम की 19वीं सदी में इसका केवल नाममात्र ही अस्तित्व में रहा गया और वह भी बिगड़कर लक्ष्मणी हो गया तथा उस जगह पर भील–भीलालों के बीस–पच्चीस टापरे ही अस्तित्व में रह गये।

लक्ष्मणी गांव का भोगौलिक एवं सामाजिक परिचय

लक्ष्मणी गांव पहाड़ी पर अवस्थित नहीं है, इस गाँव का कुल क्षेत्रफल 267.62 हेक्टेयर है, कुल मकानों की संख्यां 148 है एवं कुल जनसंख्या 1146 निवासरत है। इस गाँव की जमीन

उबड़–खाबड़ एवं लाल, काली एवं रेतीली मिट्टी है। इस गाँव के पूर्व में महाला, दक्षिण में चचरिया उम्दा पश्चिम् में गिराला एवं उत्तर में कुचदी तथा चंगनवाट गाँव अवस्थित है। इस गाँव के बीचों–बीच पूर्व–पश्चिम् दिशा में एन.एच. 79 हाईवे रोड़ निकलता है। जो कि इन्दौर–खण्डवा एवं सुरत अहमदाबाद को जोड़ता है। इस गाँव के पश्चिम् से पूर्व की ओर एक नदी बहती है जिसका नाम सुकणी नदी है जो कि इस गाँव की उत्तर की सीमा बनाती हुई निकलती है।

इस नदी के पानी से इस गांव के कुछ लोग रबी की फसल का उत्पादन करते हैं। जिसमें गैहूँ एवं चने का उत्पादन करते हैं। साथ ही सब्जी का उत्पादन भी करते हैं। खरीब की फसल में मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, उड़द, मुंग, चवले, मुंगफली, सोयाबीन एवं कपास का उत्पादन करते हैं। इस गाँव में आम, महुवें, ताड़, बोर, बबुल, पलास, बड़, पीपल एवं सीताफल आदि के पैड़ अधिक मात्रा में अवस्थित है। इन पेड़ों से अधिकर परिवार के लोगों का जीवन चलता है। अर्थात ताड़ी, आम, महुवें, बोर एवं सीताफल आदि को बाजार या अन्य गाँवों में ले जाकर बेचा जाता है। साथ ही इस गाँव के कुछ लोग अन्य व्यवसाय भी करते हैं जैसे कि इस गांव में 2 भोजनालय, 1 चाय की दुकान, 1 पंक्चर मरम्मत की दुकान, 2 फोटों–स्टेट की दुकान, 1 आटा चक्की एवं 1 प्राईवेट स्कूल भी हैं। भीलाला जनजाति के अलावा अन्य पिछड़ा वर्ग के 2 परिवार है जो कि राठोड़ समाज के है जिनके पास 2 किराना की दुकान एवं कॉस्मेटिक की दुकान है।

इस गाँव में प्राचीन जैन मन्दिर है जो कि इस क्षेत्र में प्रसिद्ध है। जिसके दर्शन के लिए देश–विदेश से लोग तीर्थ यात्रा एवं दर्शन के लिए आते हैं। जिससे इस गाँव के कुछ लोगों का व्यवसाय अर्थात् भोजनालय एवं अन्य दुकाने चलती है। इस गांव के भोजनालय में दाल–पानीये प्रसिद्ध है। इस गाँव में 2 हनुमान मन्दिर है। एक हनुमानजी का मन्दिर गाँव तीराहें पर एवं हाईवे के पास में अवस्थित है जबकि दुसरा मन्दिर गाँव के उत्तर–पश्चिम् दिशा में अवस्थित है जो कि पहुंच से दूर है अर्थात् वहां पर जाने के लिए रोड़ की सुविधा नहीं है किन्तु यह मन्दिर काफी पुराना है।

लक्ष्मणी गांव का जनांकिकीय परिचय

इस गांव में निवासरत अनुसूचित जनजाति के मकानों की संख्या 136 है जिसमें भीलाला जनजाति के मकानों की संख्या 135 है एवं बारिया जनजाति के मकानों की संख्या केवल 1 ही है तथा भील जनजाति के मकानों नही है। अनुसूचित जनजाति के मकानों की संख्या 10 है तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के मकानों की संख्या 2 है। इस तरह इस गांव में निवासरत परिवार 148 है। गांव की कुल जनसंख्या 1146 है। इसमें गांव की कुल जनसंख्या (1146) में से अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1080 (94.24%) है। जबकि अनुसूचित जाति की जनसंख्या 49 (4.27%) है। तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसुख्या 17 (1.48%) है।

अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1080 (94.24%) है में से भीलाला जनजाति की कुल जनसंख्या 1071 है जो कि कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का 99.16% है एवं गांव की कुल जनसंख्या 1146 का (93.45%) है जो कि इस गांव की कुल जनसंख्या एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का सर्वाधिक है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1080 (94.24%) है में से बारिया जनजाति के लोगों की संख्या 9 हैं। जो कि कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का 0.83%

है। तथा भील एवं बारेला जनजाति के लोग लक्ष्मणी गांव में नही पाये जाते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लक्ष्मणी गांव में अधिकतर भीलाला जनजाति के लोग ही निवास करते हैं।

इस गांव की कुल जनसंख्या 1146 में से कुल पुरूषों की संख्या 640 (55.85) एवं महिलाओं की संख्या 506 (44.15) है। अनुसूचित जनजाति के कुल लोगों की जनसंख्या 1080 में से पुरूषों की जनसंख्या 595 (55.09%) एवं महिलाओं की जनसंख्या 485 (44.91) है। इसमें कुल भीलाला जनजाति की जनसंख्या 1071 में से भीलाला जनजाति के पुरूषों की जनसंख्या 591 (55.18%) है एवं महिलाओं जनसंख्या 480 (44.81%) है। तथा कुल बारिया जनजाति की जनसंख्या में से पुरूषों की जनसंख्या 4 (44.44%) एवं महिलाओं की जनसंख्या 5 (55.56%) है। अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 49 में से कुल पुरूषों की जनसंख्या 26 (53.06%) एवं महिलाओं की जनसंख्या 23 (46. 94%) है। इस गाँव में 50 से अधिक लोग सरकारी नौकरी करते हैं। ये सभी भिलाला जनजाति के है। इनमें से अधिकतर लोग विधुत मण्डल में कार्यरत है। अन्य में से 7 शिक्षक हैं, 1 भूगोल के प्रोफेसर है, 1 सब इन्सपेक्टर, 2 सचिव, 3 सहायक सचिव, 3 पटवारी एवं 1 पोस्टमेन की नौकरी करते हैं।

गांव का पुजारा (पुजारी) रायसिंह बघेल है। जबकि पटेल (मुखिया) सुरेश बघेल है। इस गांव में 5 फलिये (मोहल्ले) है। जैसे कि, **मन्दिर फलिये** में कुल घरों की संख्या 16, **उगनला फलिये** में कुल घरों की संख्या 40, **पटेल फलिये** में कुल घरों की संख्या 51, **डावरी फलिये** में कुल घरों की संख्या 22 एवं **खेड़ा फलिये** में कुल घरों की संख्या 9 है। पटेल फलिये में कुल 51 घर है में से 10 घर अनुसूचित जाति के है एवं 2 घर अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं। जबकि 39 घर अनुसूचित जनजाति अर्थात् 38 घर भीलाला जनजाति के एवं 1 मकान बारिया जनजाति का है। इस गांव में कुल 4 ट्रेक्टर, 1 तूफान, 2 पिकअप एवं **31** मोटरसाईकल है। भीलाला जनजाति के लोगों के पास 4 ट्रेक्टर, 1 पिकअप एवं 27 मोटरसाईकल है। जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों के पास 1 पिकअप एवं 2 मोटरसाईल है। तथा अनुसूचित जाति के लोगों के पास 2 मोटरसाईकल है।

इस गांव में कुओं की संख्या लगभग 20 है जिसमें से कपिल धारा योजना के अन्तर्गत 10 से 12 कुएं है। जबकि पूरे गांव में 1 टयूबवेल अर्थात् बोरिग है। गांव की नदी में पानी मार्च तक समाप्त हो जाता है जिससे रबी की फसल का उत्पादन ठीक से नहीं हो पाता। कभी–कभी बरसात की कमी के कारण मार्च से पहले भी नदी सूख जाती है।

इस गांव की कुल साक्षरता दर 52 प्रतिशत है जिसमें पुरूषों की साक्षरता दर 26% एवं महिलाओं की साक्षरता दर 26% है। कुल मजदूरों की संख्या 459 है जिसमें पुरूष मजदूरों की संख्या 221 है एवं महिलाओं की संख्या 179 है। तथा मुख्य मजदूरों की कुल संख्या 179 है जिसमें पुरूषों की संख्या 149 एवं महिलाओं की संख्या 30 है। कम्पनीयों में कार्यरत मुख्य मजदूरों की संख्या जैसे की कल्टीवेटर में कुल 120 लोग कार्यरत है जिसमें पुरूषों की संख्या 106 एवं महिलाओं की संख्या 14 है। कृषि में कार्यरत कुल मजदूरों की संख्या 7 है जिसमें पुरूषों की संख्या 2 एवं महिलाओं की संख्या 5 है। घरों में कार्यरत मजदूरों की कुल संख्या 4 है जिसमें पुरूषों की संख्या 4 है जबकि महिलाओं की संख्या शून्य है। अन्य कार्य में मजदूरों की यंख्या 48 है जिसमें पुरूषों की संख्या 37

एवं महिलाओं की संख्या 11 है। सीमान्त (marginal) मजदूरों की कुल संख्या 280 है जिसमें पुरूषों की संख्या 72 एवं महिलाओं की संख्या 208 है। कल्टीवेटर में कार्यरत मजदूरों की संख्या 158 है जिसमें पुरूषों की संख्या 20 एवं महिलाओं की संख्या 138 है। बीना मजदूरी करने वाले लोगों की कुल संख्या 500 है जिसमें 223 पुरूष एवं 277 महिलाएं है।

तथ्य–संकलन

प्रस्तुत शोध में भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव को जानने के लिए मुख्य रूप से नृजातीय अध्ययन (Ethnography) शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। नृजातिय अध्ययन किसी समाज के प्रथानुगत व्यवहारों, विश्वासों एवं मनोवृतियों का विस्तृत वर्णनात्मक लेखा–जोखा तैयार करने की विधि है। नृजातीय प्रणाली मुख्य रूप से मानव व्यवहार के उन पक्षों के अध्ययन करने पर बल देता है, जो व्यक्ति के जीवन में दिन–प्रतिदिन की सामान्यगत व व्यवहारिक अन्तर्कियाओं में किया जाता है। यहां यह ध्यान रखा जाता है कि व्यवहारिक तथा दिन–प्रतिदिन की दशाएं किस प्रकार सामाजिक रूप में संगठित होती हैं, और इस रूप में वे कैसे दीख पड़ती है, कैसे उनकी जानकारी प्राप्त होती है और किस प्रकार व्यक्ति एक समान क्रम में उन्हें देखते है, जिस प्रकार समाज के अन्य व्यक्ति भी उन्हें उसी प्रकार देखते हैं गारफिंकल, (1967)। इसमें अपना ध्यान व्यक्तियों के उन प्रतिमानों के अध्ययन पर भी केंद्रित किया जाता हैं जो वह सामाजिक संबंधों की व्यवस्था में सामाजिक यर्थाथता के आधार पर विकसित करते है। अतः नृजाति प्रणालीविज्ञान एक समूह के सदस्यों को समझनें, निर्णय लेने, तार्किक होने, क्रिया के लिए उत्तरदायी होने आदि के लिए प्रयुक्त पद्धतियों का अध्ययन है। यह सामाजिक अनुसंधानकर्ता को वास्तविकता के निकट व प्रत्यक्ष रूप से समझने में सहायता प्रदान करता है। इसलिए इस उपागम (जिसे पद्धति, सिद्धान्त या दृष्टिकोण भी कहा जाता है) में सहभागी अवलोकन, डायरियों, आत्मकथाओं इत्यादि प्रविधियो का प्रयोग किया जाता है। नृजाति प्रणालीविज्ञान समाज का व्यापक सिद्धान्त नहीं है, परन्तु यह सामाजिक व्यवस्था के मौलिक आधारों का अध्ययन करने का एक व्यक्तिपरक उपागम है जिमरमेन (1978)। महाजन एवं महाजन (2012) ने अपनी पुस्तक सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान में कहा है कि नृजाति प्रणाली विज्ञान स्वभाविक रूप से अध्ययन का एक उपागम है जो कि सामाजिक अनुसंधानकर्ता को वास्तविकता के निकट व प्रत्यक्ष रूप से समझने में सहायता प्रदान करता है। इसीलिए इस उपागम में सहभागी अवलोकन, डायरिया, आत्मकथाएं आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। स्वभाविक है कि यह उपागम व्यापक या वृहद–स्तर (Macro-level) पर अध्ययन में सहायक न होकर सूक्ष्म या लघुतम–स्तर (Micro-level) पर अध्ययनों में सहायक होता है।

शोधकर्ता ने अध्ययन क्षेत्र अलीराजपुर जिले के भीलाला जनजाति के नृजातीय अध्ययन के लिए सुविधापूर्ण निदर्शन (convenience sampling) द्वारा लक्ष्मणी गांव का चयन किया। इस गांव में भीलाला जनजाति के कुल 135 घर है। नृजातीय अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने सहभागी अवलोकन (participant observation) प्रविधि के साथ–साथ गहन एवं समूह साक्षात्कार का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने लक्ष्मणी गांव में उपरोक्त प्रविधियों से सूचनाओं को एकत्र करने का कार्य एक साल (12/08/2013 से 11/08/2014) की अवधि तक किया। नृजातीय अवलोकन, गहन एवं समूह

साक्षात्कार के लिए शोधकर्ता ने प्रारम्भ में असंरचनात्मक/खुली साक्षात्कार अनुसूची (unstructured/open ended interview schedule) का प्रयोग किया। इस अवधि में किये गए अध्ययन में शोधकर्ता ने गुणात्मक एवं आगमन उपागम (Qualitative and Inductive Approach) का प्रयोग किया। इस दौरान शोधकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य से संबंधित सभी उपयुक्त तथ्यों का विवरण प्रतिदिन डायरी नोट्स एवं फिल्ड नोट्स के रूप में तैयार किया।

इस प्रकार शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक (Qualitative and Quantitative) दोनों की मिश्रित प्रविधि (mixed method) का प्रयोग किया।

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता ने शोध अध्ययन के अन्तर्गत नृजातीय सहभागी अवलोकन, असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार एवं संरचनात्मक साक्षात्कार प्रविधियों द्वारा लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के लोगों पर वैश्वीकरण के प्रभाव से संबंधित तथ्यों का संग्रहण करने के लिए प्रतिदिन डायरी नोट्स, फिल्ड नोट्स तैयार कि एवं उसके आधार पर तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या की। शोधकर्ता ने संरचनात्मक साक्षात्कार द्वारा संग्रहित सूचनाओं का विश्लेषण करने के लिए SPSS (Statistical Package for Social Sciences) का प्रयोग किया।

अध्यायों की संरचना

प्रस्तुत शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है जो निम्नवत हैं:

1. **प्रथम अध्याय–प्रस्तावना एवं शोधविधि :** प्रथम अध्याय में प्रस्तुत शोध का परिचय, साहित्य की समीक्षा एवं अवधारणात्मक–सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, अध्ययन का महत्व, अध्ययन का उद्धेश्य, अध्ययन की उपकल्पनाएं एवं शोध–प्रविधि वर्णित है।

2. **द्वितीय अध्याय– भीलाला जनजाति – एक परिचयः** इस अध्याय में भीलाला जनजाति का परिचय यथा भीलाला जनजाति का विभाजन, उनकी शारीरिक संरचना, धर्म, जीवनशैली, खान–पान, वस्त्र आभूषण, प्रस्थिति, सामाजिक संस्तरण, विभेदीकरण, आर्थिक जीवन, संस्कृति इत्यादि वर्णित है जो कि शोधकर्ता द्वारा नृजातीय अध्ययन, असंरचनात्मक साक्षात्कार एवं द्वितीयक स्त्रोतों के आधार पर संग्रहित किया गया है।

3. तृतीय अध्याय– भीलााला जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभावः एक गुणात्मक अध्ययनः इस अध्याय में शोधकर्ता ने अपने शोध विषय से संबंधित तथ्यों का वर्णन नृजातीय शोध प्रविधि के माध्यम से की है। इस अध्याय को प्रस्तुत शोध के तीन उद्देश्यों के आधार पर तीन भागों (Sections) में विभक्त किया गया है। ये तीन भाग हैः i. भीलााला जनजाति के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर वैश्वीकरण का प्रभाव, ii. भीलााला जनजाति के सामाजिक विकास

के क्षेत्र (विशेषतः शिक्षा एवं स्वास्थ्य) पर वैश्वीकरण का प्रभाव iii. भीलााला जनजाति पर वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव।

4. **चतुर्थ अध्याय– भीलााला जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभावः एक मात्रात्मक अध्ययनः** इस अध्याय में शोधकर्ता ने संरचनात्मक साक्षात्कार के आधार पर एकत्रित तथ्यों का सारणीबद्ध विश्लेषण किया है।

5. **पंचम अध्याय–निष्कर्षः** इस अध्याय में शोधकर्ता ने नृजातीय (गुणात्मक) एवं मात्रात्मक अध्ययन से संबंधित तथ्यों के विश्लेषण का सारांश एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

सारांश एवं निष्कर्ष

इस अध्याय में शोधकर्ता ने नृजातीय (सहभागी अवलोकन एवं असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार) एवं मात्रात्मक (संरचनात्मक साक्षात्कार) अध्ययन से संबंधित तथ्यों के विश्लेषण का सारांश एवं निष्कर्ष वर्णित है।

I. नृजातीय अवलोकन (सहभागी अवलोकन एवं असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार) एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं से संबंधित निष्कर्ष :

भीलााला जनजाति के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर वैश्वीकरण का प्रभाव

नृजातीय अध्ययन (सहभागी अवलोकन एवं असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार) से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वैश्वीकरण (निजीकरण एवं उदारीकरण) के प्रभाव से भीलाला जनजाति के आर्थिक जीवन (कृषि, आय, संपत्ति) में वाण्ज्यीकरण एवं बाजारीकरण बढ़ा है, अधिकांश लोगों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आयी है तथा आंतरिक सामाजिक–आर्थिक विषमता बढ़ी है। उसके आधार पर भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभावों से संबंधित तथ्यों को निम्नवत प्रस्तुत किया है।

भीलाला जनजाति के कृषि व्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- शोधकर्ता ने अपने नृजातीय अध्ययन में पाया कि भीलाला जनजाति के लोगों का मानना है कि **वैश्वीकरण की नीतियों** के कारण कृषि भूमि का उपयोग निर्यात–उन्मुखी फसलों के उत्पादन के लिए किया जाने लगा है। जैसे उदारीकरण के कारण छोटे किसान वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्द्धा करने पर मजबूर हुए हैं जहां कृषि संबंधी उत्पादों की कीमत कम है।
- **कृषि के वाणिज्यिकरण** और वस्तु बाजार (जिन्स बाजार) का प्रभाव भीलाला जनजाति के लोगों पर भी पड़ा हैं। जहां कपास, गन्ना और सोयाबीन जैसी नगदी फसलें हमेशा से बाजार के लिए उगाई जाती थीं, वहीं अब गेंहूँ, और मक्का जैसी मुख्य उपज का भी व्यापार किया जाता है। इन बाजारों के विकसित होने से अब वे ऐसे क्षेत्रों में भी पहुँच चुके है। जो पहले अनछुए थे। इस कारण जनजातीय समाज का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा

अत्यधिक अस्थिर जिंस बाजार की कीमतों के उतार–चढ़ाव के संपर्क में आता है, जो वैश्विक और स्थानीय कारकों से संचालित होती हैं। वैश्वीकरण के कारण भीलाला जनजाति भी महत्वपूर्ण तयशुदा फसलों (उड़द, गेहूँ इयादि) का उत्पादन कम कर रही है जबकि कपास जिसका उत्पादन ज्यादा होता है उसे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा के कारण कम मूल्य में बेचने के लिए विवश है। जिसके कारण भीलाला जनजाति के लोगों को निर्धनता की मार झेलनी पड़ रही है एवं पूर्व की अपेक्षा वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण ज्यादा गरीब हो रहें है।

- शोधकर्ता ने यह भी पाया कि भीलाला जनजाति के जो लोग पहले से अमीर थे वे वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण और अमीर हो गये। इस प्रकार शोधकर्ता भीलाला जनजाति के लोगों से गहन साक्षात्कार के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि भीलाला जनजाति में वैश्वीकरण के कारण सामाजिक असमानता बढ़ी है।
- शोधकर्ता ने पाया कि लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के लोग कृषि कार्य के लिए परम्परागत देशज तकनीक के स्थान पर नवीन उच्च तकनीक का भी प्रयोग कर रहें है। लेकिन इन दोनों तकनीकों का इस्तेमाल करने वाले लोग लगभग बराबर की संख्या में है। इस प्रकार शोधकर्ता ने अपने नृजातीय अध्ययन के दौरान यह पाया कि पूर्व में भीलाला जनजाति के लोग कृषि कार्य में केवल परम्परागत देशज तकनीक का ही प्रयोग करते थे जबकि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण अब लगभग आधे लोग नवीन उच्च तनकीक का प्रयोग कृषि कार्य में कर रहें है।
- वैश्वीकरण के कारण उनकी परम्परागत अर्थ–व्यवस्था ध्वस्त हो रही है। लोग दर्जनों आसपास के बाजार में मजदूरी एवं दुकानों पर काम करने जाते हैं जिससे हालांकि उनकी आय में वृद्धि हुई है। लेकिन नीजिकरण के कारण आज इनका शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित हो रहें है।

भीलाला जनजाति के सामाजिक संरचना पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- वैश्वीकरण के कारण भीलाला जनजाति में गांव से शहर की ओर प्रव्रजन (Rural-urban migration) में भी हो रही है हालांकि इसकी गति अभी मंद है। ज्यादा से ज्यादा लोग गांव से शहरों की ओर पलायन कर कर रहें हैं। शोधकर्ता ने भीलाला जनजाति के लोगों का गांव से शहरों की ओर पलायन के लिए विकर्षण (Push Factor) एवं आकर्षण (Pull Factor) दोनों कारक उत्तरदायी है। जहां एक ओर गांव गरीबी इन्हें गांव छोड़ने के लिए मजबूर कर रहीं है वहीं दूसरी ओर शहरों की आधारभूत संरचना, गुणवत्तापूर्ण जीवन एवं अवसरों की उपलब्धता उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती है।
- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि शहर की ओर प्रव्रजन के कारण भीलाला जनजाति में परिवार का विघटन हो रहा है।
- शोधकर्ता ने यह देखा है कि वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने भीलाला जनजाति में होने वाले भेदभाव (discrimination) को कमजोर कर दिया है। अर्थात् भीलाला जनजाति की अन्य जाति, उपजाति एवं धर्म के बीच होने वाले मतभेद कम हुए हैं। वर्तमान में ये लोग सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, यातायात, होटलों, शिक्षण संस्थानों, धार्मिक स्थलों इत्यादि ने

जाति–व्यवस्था के परम्परागत स्वरूप को परिवतर्तित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में भीलाला जनजाति के लोग दूसरी जाति एवं वर्ग के पेशे को अपना रहे हैं।

- वैश्वीकरण के कारण आज भीलाला जनजाति के लोग दो संस्तरणों में विभाजित हो गये हैं अर्थात् नौकरी, व्यापार करने वाले एवं मजदूरी करने वाले। अपने अध्ययन के दौरान शोधकर्ता ने यह पाया कि इन दोनों संस्तरणों में उच्चता एवं निम्नता का तत्व भी समाहित था अर्थात् समाज में नौकरी करने वाले लोगों की प्रस्थिति मजदूरी करने वाले लोगों से उच्च है।

भीलााला जनजाति के सामाजिक विकास के क्षेत्र (विशेषतः शिक्षा एवं स्वास्थ्य) पर वैश्वीकरण का प्रभाव

शोधकर्ता ने नृजातीय अध्ययन (सहभागी अवलोकन एवं असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार) एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर भीलाला जनजाति के सामाजिक **विकास के क्षेत्र (विशेषतः शिक्षा एवं स्वास्थ्य) पर वैश्वीकरण संबंधी नीतियों** के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। तथा इस विश्लेषण के आधार पर में शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उदारीकरण तथा नीजिकरण के परिणामस्वरूप **शिक्षा एवं स्वास्थ्य** के क्षेत्र में भीलाला जनजाति के लोगों का पहुंच (Access) घटा है तथा इन क्षेत्रों में आन्तरिक विषमता बढ़ी है।

भीलाला जनजाति के शिक्षा के क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- भीलाला जनजाति के लोगों का मानना है कि वैश्वीकरण की नीतियों के अनुरूप आजकल शिक्षा के नये प्रतिमानों की स्थापना की जा रही है। राष्ट्रीय स्तर पर वैश्वीकरण की नीतियों के अनुरूप ही तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के फैलाव का प्रयास किया गया है। वैश्वीकरण के नये मानको एवं प्रतिमानों के अनुरूप स्वयं को ढालने की कोशिश में पुरानी शिक्षा व्यवस्था ध्वस्त हो रही है।
- इन नये प्रतिमानों के अनुरूप शिक्षण संस्थाओं का आभाव है विशेषकर सरकारी शिक्षण संस्थाओं का। जिन गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा वैश्विक प्रतिमानों के अनुरूप है उनका शिक्षण शुल्क बहुत ज्यादा है। जिसके कारण गरीब एवं समाज के हाशिये पर रहने वाले लोग विशेषकर जनजातिय समाज के लोगों का वैश्विक स्तर के औपचारिक, अनौपचारिक एवं तकनीकि शिक्षा तक पहुॅच (Access) नहीं हो पा रहीं है।
- भीलाला जनजाति के लोगों को रोजगरोन्मुखी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें वर्तमान समय के रोजगार के अनुशोधकर्ता ने अपने नृजातीय अध्ययन के दौरान यह पाया कि भीलाला जनजाति के लोग यह मानते है कि रूप शिक्षा का अवसर नहीं मिल रहा है।
- शिक्षा के निजीकरण से शिक्षा अत्यन्त महंगी हो गई है। ये लोग सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूलों एवं कॉलेजों को शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर ज्यादा अच्छा मानते हैं। हालांकि लक्ष्मणी गांव में पांच सरकारी एवं एक प्राइवेट स्कूल है। शोध के दोरान यह पाया गया कि सरकारी स्कूल में प्राइवेट स्कूल की अपेक्षा ज्यादा संख्या में बच्चे भर्ती हैं। इसके

पीछे कारण सरकारी स्कूलों की फीस प्राइवेट स्कूलों से कम होना है। ये लोग ज्यादा शिक्षण शुल्क होने के कारण इच्छा होने के बावजुद अपने बच्चों की भर्ती प्राइवेट स्कूलों में नही करा पा रहें। भीलाला जनजाति के लोगों का यह भी मानना है कि यद्यपि पैसे की कमी के कारण वे अपने बच्चों को सरकारी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ा तो रहें है परन्तु वे सरकारी स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता से संतुष्ट नही है। उनका मानना है कि सरकारी शिक्षण संस्थानों में आधारभूत संरचना एवं अच्छे शिक्षकों का अभाव है। इस प्रकार, शोधकर्ता ने भीलाला जनजाति के लोगों के नृजातीय अध्ययन से इन तथ्यों की पुष्टि की है कि वे अपने बच्चों को वैश्विक स्तर की शिक्षा देना तो चाहते है परन्तु वैश्वीकरण की नीतियों के कारण इस प्रकार की शिक्षा उनकी पहुॅच (Access) से बाहर है।

भीलाला जनजाति के स्वास्थ्य के क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- नृजातीय अध्ययन के दौरान यह पता चला कि लक्ष्मणी गांव में सरकारी उप स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या एक है जिसमें एक एएनएम, एक आशा, दो आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं एक मल्टीपरपस वर्कर है। जो भीलाला जनजाति के लोगों के स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम नही है। इस उपस्वास्थ्य केन्द्र में स्वास्थ्य से संबंधी में जरूरी उपकरणों का अभाव है। साथ ही इस केन्द्र में कार्य करने वाले समुचित रूप से प्रशिक्षित नहीं है। जिसके कारण भीलाला जनजाति के लोगों को अच्छी चिकित्सीय सुविधा के लिए प्राइवेट अस्पतालों एवं जिला अस्पताल का रूख करना पड़ता है। जो लक्ष्मणी गांव से दूर डिस्ट्रक्ट हेडक्वाटर में अवस्थित है। इन अस्पतालों की दूरी लक्ष्मणी गांव से अधिक होने के कारण गम्भीर रोगीयों की मृत्यू उन्हें अस्पताल ले जाने के रास्ते में ही हो जाती है।
- इसके अलावा प्राइवेट अस्पतलों में चिकित्सा शुल्क अत्यधिक होने के कारण यह उनकी पहुॅच (Access) के बाहर है। भीलाला जनजातियों के लोगों का मानना है कि इन्हीं कारणों से यहां मातृ–मृत्यु दर एवं शिशु–मृत्यु दर में बहुत ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है।

भीलााला जनजाति पर वैश्वीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में नृजातीय अध्ययन (सहभागी अवलोकन एवं असंरचनात्मक गहन साक्षात्कार) एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर भीलाला जनजाति की जीवन–शैली (भौतिक वस्तुएं, वेश–भूषा, खान–पान), सामाजिक संबंधों एवं नवीन जनसंचार माध्यम (टेलीविजन एवं मोबाइल फोन) के प्रभाव से संबंधित तथ्यों का वर्णन किया गया है। इस विश्लेषण के आधार पर में शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वैश्वीकरण के नये संचार–माध्यम (विशेषकर टेलीविजन एवं मोबाइल) के प्रभाव से भीलाला जनजाति की जीवन–शेली में परिवर्तन आया है। इससे इनकी संस्कृति का स्वरूप (heterogeneous) होजा जा रहा है, मगर इस परिवर्तन की दिशा मुख्यतः adaptive है।

खान–पान, वेशभूषा एवं आवास पर वैश्वीकरण का प्रभाव

- शोधकर्ता ने अपने नृजातीय अध्ययन के दौरान वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव भीलाला जनजाति के भोजन, पहनावा और निवास पर पाया है। इस जनजाति के लोग खेती के अतिरिक्त, गाँव से दूर भी दूसरे व्यवसायों को अपनाने लगे है। उनके खान–पान में अन्तर आने लगा है। कारखाने और शहर के लोग जिस प्रकार के भोजन को करते हैं, इसे भीलाला भी अपनाने लगे हैं। इस बदलाव ने भोजन को स्थानीय आदतों में बड़ा अन्तर आने लगा है। होटलों के खान–पान का व्यवहार धीरे–धीरे भीलाला लोगों को रास आने लगा है।
- महिलाओं के वस्त्रों में घाघरा, ब्लाऊज एवं ओढ़नी (लुगड़ा) आदि धारण करते थे, किन्तु वर्तमान में कुछ महिलायें ओढ़नी, लुगड़ा, साँड़ी, घाघरा, ब्लाउज, जिन्स–टी–शर्ट, पेन्ट–शर्ट, स्कॉंट–शर्ट, स्कॉंट–टी–शर्ट, सलवार सूट, जूते, सेन्डील आदि वस्त्रों को धारण करती है। एवं मेक–अप का सामान, साबन, क्रिम स्प्रे, पाउडर, आदि वस्त्रों का उपयोग करने लगी है। और इनसे भी आगे नई पिढ़ी निकल गई है जो टेलीविजन को देखकर मोबाईल के फेसबुक एवं वाट्सअप, इन्टरनेट एवं बाहरी लोगों से सम्पर्क बढ़ने के कारण नये–नये वस्त्रों का चयन करते है और उन्हें खरीदने एवं पहनने की जिद करते है। लेकिन ये उन्हीं परिवारों में अधिक देखने को मिला है
- शोधकर्ता ने यह भी पाया कि भीलाला जनजाति के लोग आजकल **पेप्सी, कोक, नुडल्स, पीजा, बर्गर आदि** का धड़ल्ले से उपयोग कर रहें है। यह शराब के विशेष रूप से शौकीन होते हैं। इसलिए कुछ लोग शराब का सेवन भी करते है। शराब का निर्माण स्वयं महुआ के फुलों को सड़ाकर भाटी से निकलते है। जिसे भाटी चढ़ाना कहते है। शराब इनके धार्मिक, सामाजिक व मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन हैं। इस जनजाति के सदस्य अण्डों के विशेष तौर पर शैकीन होते हैं। किन्तु वर्तमान में कुछ लोग महुँए के फुलों को बेचकर बाजार से बनी–बनाई शराब खरीदकर पीते है। और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण बड़े ब्राण्ड के विदेशी शराब का उपयोग करने लगे हैं। जिससे शराब बनाने के उपकरण भी धीरे–धीरे खत्म होने लगी है। नई पिढ़ी के कुछ लोगों को शराब बनाना ही नहीं आता है।
- इस नृजातीय अध्ययन में शोधकर्ता ने यह पाया कि भीलाला अब सघन (Compact) मोहल्ले/फलिये में रहने लगे हैं। मकान बनावट शहरी मकानों की तरफ पक्की होती है। किन्तु भीलाला जनजाति के आवास में उनके गाँव में कुछ मकान छितरे–भितरे होते है एवं कुछ मकान एक साथ भी देखने को मिलते हैं पहले अधिकतर मकान एक मोहल्ले/फलिये में होते थे और कुछ मकान बिखरे होते थे किन्तु वर्तमान में कुछ लोग अपने मकान मोहल्ले से अलग अपने खेत में या रोड के पास मकान बनाने लगे हैं।

भीलाला जनजाति पर वैश्वीकरण का प्रभाव के मात्रात्मक विश्लेषण से संबंधित निष्कर्ष

- इस सारणी में शिक्षा के विभिन्न स्तर एवं लिंग के उत्तरदाताओं के अनुसार, वैश्वीकरण की जानकारी एकत्रित की गई। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि लगभग आधे से अधिक 70 (51.85%) उत्तरदाताओं को वैश्वीकरण की जानकारी हैं।** इनमें से 40 (57.

14%) पुरूष एवं 30 (42.86%) महिलाएँ है। जबकि कुल 135 उत्तरदाताओं में से लगभग आधे से कम 65 (48.15%) उत्तरदाताओं को वैश्वीकरण की अवधारणा से जानकारी नहीं है।

- शिक्षा के विभिन्न एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति के लोगों के आर्थिक जीवन में वाणिज्यकरण एवं बाजारीकरण से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि लगभग एक तीहाई 51 (37.78%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके आर्थिक जीवन में वाणिज्यकरण एवं बाजारीकरण बढ़ा है।** इनमें 23 (45.10%) महिलाओं की अपेक्षा 28 (54.90%) पुरूषों में ज्यादा है।

- उपरोक्त सारणी में विभिन्न आयु समूह एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति में इन दिनों कृषि कार्यों में प्रयोग किया जाने वाले तकनीक (New technology) से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि **कुल 135 उत्तरदाताओं में से लगभग आधा 61 (45.19%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे कृषि कार्यों में परंपरागत देशज तकनीक (Tarditional indigenous technology) के स्थान पर नवीन उच्च तकनीक (New technology) का प्रयोग करते हैं।** इनमें महिलाओं 25 (40. 98%) की अपेक्षा पुरूषों की संख्या 36 (59.02%) ज्यादा है। जबकि कुल 135 उत्तरदाताओं में से लगभग आधे से ज्यादा 74 (58.61%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे कृषि कार्यों में परंपरागत देशज तकनीक (Tarditional indigenous technology) के स्थान पर नवीन उच्च तकनीक (New technology) का प्रयोग **नहीं** करते हैं।
- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, कृषि में के बीजों का प्रयोग से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 135 उत्तरदाताओं में से 98 (71.59%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे कृषि के लिए स्थानीय रूप से विकसित बीज का प्रयोग करते हैं। **कुल 135 उत्तरदाताओं में से 33 (24. 44%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे कषि में दोनों प्रकार के बीजों का प्रयोग करते हैं। अर्थात् स्थानीय रूप से विकसित एवं उच्च पैदावार वाली हाइब्रिड बीज का प्रयोग करते है।** परंपरागत देशज तकनीक (Tarditional indigenous technology) के स्थान पर नवीन उच्च तकनीक (New technology) का प्रयोग करते हैं। अतः इस सारणी से यह पता चलता है कि कुल 98 (71.59%) उत्तरदाताओं में से 33 (55.93%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं।
- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, उनके कृषि कार्य के लिए किन तरीकों का इस्तेमाल करते से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि **कुल 123 (91.11%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके द्वारा कृषि कार्यों में मशीनों एवं बैलों अर्थात् दोनों का प्रयोग किया जाता है।** कुल 135 उत्तरदाताओं में से 12 (8.89%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे केवल बैलों के द्वारा कृषि कार्य करते जबकि 135 उत्तरदाताओं में से कोई भी उत्तरदाता ऐसा नही है जो कृषि कार्यों में केवल मशीनों का इस्तेमाल करते है। पुनः उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह

पता चलता है कि **कुल 123 उत्तरदाता जो कृषि में मशीनों एवं बैलों अर्थात् दोनों के द्वारा कृषि कार्य करते हैं उनमे से 58 (98.31%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं।**

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, कृषि कार्य के लिए किस प्रकार के उर्वरकों का प्रयोग करते है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 135 (100.0%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके द्वारा कृषि में स्थानीय रूप से विकसित गोबर या वर्मी कम्पोस्ट एवं देश में विकसित केमिकल वाले तीनों प्रकार के उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है।** इनमें 69 (49.62%) पुरूष एवं 68 (50. 38%) महिला है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 135 उत्तरदाता जो कृषि में स्थानीय रूप से विकसित गोबर या वर्मी कम्पोस्ट एवं देश में विकसित केमिकल वाले उर्वरकों का प्रयोग करते हैं वे 59 (43.70%) 20 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के हैं। इनमें 34 (57.63%) पुरूष एवं 25 (42.37%) महिलाएं है। इससे पता चलता है कि भीलाला जनजाति के लोग वैश्वीकरण से प्रभावित हो रहें है।
- **सभी उत्तरदाता कृषि उत्पादन का उपयोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए एवं अतिरिक्त उत्पादन को बाजार में बेचने के लिए अर्थात् दोनों के लिए करते हैं।** इनमें से 67 (49.62%) महिला एवं 68 (50.38%) महिला है।
- उपरोक्त सारणी में विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, फसल बेचने के लिए मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग करने से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 42 (31.11%) उत्तरदाता फसल बेचने के लिए मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग करते हैं।** इनमें से 29 (69.05%) पुरूष एवं 13 (30. 95%) महिलाएं है। कुल 93 (68.89%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे फसल बेचने के लिए मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग नहीं करते हैं। इनमें से 38 (40.86%) पुरूष एवं 55 (59. 14%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर सारणी के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 42 (31.11%) उत्तरदाताओं में से 30 (50.85%) उत्तरदाता जो 20 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के हैं जो फसल बेचने के लिए मोबाइल एवं इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। इनमें से 22 (73.33%) पुरूष एवं 8 (26.67%) महिलाएं है।
- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, मोबाइल एवं इंटरनेट का फसल बेचने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करने से अब आपको मध्यस्थों या दलालों (Intermediaries) की जरूरत नही पड़ती है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 23 (17.05%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें मोबाइल एवं इंटरनेट का फसल बेचने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करने से अब आपको मध्यस्थों या दलालों (Intermediaries) की जरूरत नही पड़ती है।**

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, फसल बेचने की प्रक्रिया में मोबाइल एवं इंटरनेट के इस्तेमाल से आपको पहले की अपेक्षा ज्यादा लाभ हो रहा है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 59 (43. 63%) उत्तरदाताओं का कहना है कि फसल बेचने की प्रक्रिया में मोबाइल एवं इंटरनेट के**

इस्तेमाल से पहले की अपेक्षा ज्यादा लाभ हो रहा है। इनमें से 34 (57.63%) पुरूष एवं 25 (42.37%) महिलाएं है। जबकि कुल 135 उत्तरदाताओं में से 76 (56.30%) उत्तरदाताओं का कहना है कि फसल बेचने की प्रक्रिया में मोबाइल एवं इंटरनेट के इस्तेमाल से पहले की अपेक्षा ज्यादा लाभ नही हो रहा है। इनमें से 33 (43.42%) पुरूष एवं 43 (56.58%) महिला है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर सारणी के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 59 (43.63%) उत्तरदाताओं कहना है कि फसल बेचने की प्रक्रिया में मोबाइल एवं इंटरनेट के इस्तेमाल से उनको की अपेक्षा ज्यादा लाभ नही हो रहा है जिनमे 43 (72.88%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें से 25 (58.13%) पुरूष एवं 18 (41.46%) महिलाएं है।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति के लोगों द्वारा **मोबाइल इंटरनेट एवं टेलीविजन के इस्तेमाल करने से उनकी आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 31 (22.96%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके द्वारा मोबाइल इंटरनेट एवं टेलीविजन के इस्तेमाल करने से उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है।** इनमें से 27 (54.84%) पुरूष एवं 14 (45.16%) महिलाएं है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 104 (77.04%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके द्वारा मोबाइल इंटरनेट एवं टेलीविजन के इस्तेमाल करने से उनकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आई है। इनमें से 50 (48.08%) पुरूष एवं 54 (51.92%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर सारणी के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 31 (22.96%) भीलाला जनजाति के लोगों द्वारा मोबाइल, इंटरनेट एवं टेलीविजन के इस्तेमाल करने से उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है इनमें 21 (35.59%) उत्तरदाता की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें से 12 (57.14%) पुरूष एवं 9 (42.86%) महिलाएं है।

- **उत्तरदाताओं में से 109 (80.7%) उत्तरदाताओं का कहना है कि कृषि के वाणिज्यीकरण एवं बाजारीकरण के कारण भीलाला जनजातीय समाज में आंतरिक सामाजिक–आर्थिक विषमता बड़ी है यानि अमीर ज्यादा अमीर हो गए है एवं गरीब ज्यादा गरीब हो गए है।** तथा (14.8%) उत्तरदाताओं का कहना है कि कृषि के वाणिज्यीकरण एवं बाजारीकरण के कारण भीलाला जनजातीय समाज में आंतरिक सामाजिक एवं आर्थिक विषमता बड़ी है यानि अमीर ज्यादा अमीर हो गए है एवं गरीब ज्यादा गरीब नही हुए है। जबकि (80.7%) उत्तरदाताओं का कहना है कि कृषि के वाणिज्यीकरण एवं बाजारीकरण के कारण भीलाला जनजातीय समाज में आंतरिक सामाजिक–आर्थिक विषमता बड़ी है यानि अमीर ज्यादा अमीर हो गए है एवं गरीब ज्यादा गरीब हुए है यास नही के बारे में कृछ पता नही है। उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में लक्ष्माणी गांव के भीलाला जनजाति के (80.7%) लोगों को लगता है कि कृषि के वाणिज्यीकरण एवं बाजारीकरण के कारण भीलाला जनजातीय समाज में आंतरिक सामाजिक–आर्थिक विषमता बड़ी है यानि अमीर ज्यादा अमीर हो गए है एवं गरीब ज्यादा गरीब हो गए है।

- **कुल उत्तरदाताओं में (56.3%) लगभग आधे उत्तरदाताओं का कहना है कि उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण आपके क्षेत्र में नौकरी के अवसर बढ़े है।** (27.4%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण आपके क्षेत्र में नौकरी के अवसर नही बढ़े है। (14.8%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण आपके क्षेत्र में नौकरी के अवसर बढ़े हैं या नही इसका उन्हें पता नही है। जबकि (1.5%) लगभग नगण्य उत्तरदाताओं का कहना है कि उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण आपके क्षेत्र में नौकरी के अवसर बढ़े हैं या नही उसका उत्तर देना नही चाहते है। अतः इससे यह होता है कि वर्तमान में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति में (56.3%) लोगों को लगता है कि उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण उनके क्षेत्र में नौकरी के अवसर बढ़े हैं। नौकरी से इनका मतलब यह है कि अलिराजपुर जिला लक्ष्मणी गांव से आठ किलोमिटर के होने से इस गांव के अधिकतर लोग आवश्यकतानुसार एवं समय के अनुसार नीजि क्षेत्र में दैनिक मजदूरी एवं मासिक वैतन तथा अन्य छोटी–मोटी नोकरी के लिए शहर जाते है एवं शाम को वापस घर आ जाते हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 54.8% उत्तरदाताओं का कहना है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण उनकी या उनके परिचितों के आय एवं संपत्ति में वृद्वि हुई है।** 9.6% उत्तरदाताओं का कहना है कि उनकी या उनके परिचितों के आय एवं संपत्ति में वृद्वि नहीं हुई है। (3.0%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनकी या उनके परिचितों के आय एवं संपत्ति में वृद्वि हुई है यास नही उसका जवाब पता नही है। (5.2%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उनकी या उनके परिचितों के आय एवं संपत्ति में वृद्वि हुई है या नही उसके बारे में कुछ कह नही सकते है अर्थात् (17.8%) लगभग एक पांचवा भाग उत्तरदाताओं को किसी न किसी रूप से नोकरी के अवसर बढ़ने के जवाब में हां कहने के बावजूद उनके परिवार में कोई भी सदस्य नोकरी नही कर करहे है या पता नही है या कुछ कह नही सकते हैं। अतः इस सारणी से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव में भीलाला जनजाति के परिवार के (54.8%) लगभग आधे से कुछ अधिक लोग किसी न किसी तरह से नीजि क्षेत्र से कभी न कभी आमदनी प्रात्त करते हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 66.7% उत्तरदाताओं लगता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण कृषि में मल्टीनेशनल कंपनी को उर्वरकों, बीजों, कीटनाशकों एवं नवीन तकनीकों इत्यादि के प्रयोग में बढ़ोत्तरी हुई है।** 33.3% लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं को लगता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण कृषि में मल्टीनेशनल कंपनी को उर्वरकों, बीजों, कीटनाशकों एवं नवीन तकनीकों इत्यादि के प्रयोग में बढ़ोत्तरी नही हुई है या इसके संबंध में उन्हें पता नही है या उसके संबंध में कुछ कह नही सकते है। अतः स्पष्ट होता है कि लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति में (66.7%) लोगों को लगता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण कृषि में मल्टीनेशनल कंपनी को उर्वरकों, बीजों, कीटनाशकों एवं नवीन तकनीकों इत्यादि के प्रयोग में बढ़ोत्तरी हुई है।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 69.6% उत्तरदाताओं का कहना है कि मल्नीनेशनल कंपनी से खरीदे गए बीज स्थानीय रूप से विकसित किए गए बीजों से ज्यादा गुणवत्तायुक्त होतें है।** 30.4**%** लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं का कहना है कि मल्नीनेशनल कंपनी से खरीदे गए बीज स्थानीय रूप से विकसित किए गए बीजों से ज्यादा गुणवत्तायुक्त नही होतें है या इससे संबंधित कुछ पता नही है या कुछ कह नही सकते हैं। अतः इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 69.6**%** लोगों का कहना है कि मल्नीनेशनल कंपनी से खरीदे गए बीज स्थानीय रूप से विकसित किए गए बीजों से ज्यादा गुणवत्तायुक्त होतें हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 69.6% उत्तरदाताओं को लगता है कि मल्टीनेशनल कंपनी से खरीदे गए हाइब्रिड बीजों के प्रयोग से अधिक (Surplus) पैदावार होने के कारण कृषकों की आय एवं संपत्ति में अपेक्षाकृत बढ़ोत्तरी हुई है।** 30.4**%** लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं को लगता है कि मल्टीनेशनल कंपनी से खरीदे गए हाइब्रिड बीजों के प्रयोग से अधिक (Surplus) पैदावार होने के कारण कृषकों की आय एवं संपत्ति में अपेक्षाकृत बढ़ोत्तरी नही हुई है या इससे संबंधित पता नही है या कुछ कह नही सकते है। इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 69.6**%** लोगों को लगता है कि मल्टीनेशनल कंपनी से खरीदे गए हाइब्रिड बीजों के प्रयोग से अधिक (Surplus) पैदावार होने के कारण कृषकों की आय एवं संपत्ति में अपेक्षाकृत बढ़ोत्तरी हुई है।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 84.4% लगभग उत्तरदाताओं को लगता है कि इन दिनों अलीराजपुर जिले में प्राइवेट स्कूलों में वृद्वि हुई है।** जबकि 15.6**%** लगभग उत्तरदाताओं का लगता है कि इन दिनों अलीराजपुर जिले में प्राइवेट स्कूलों में वृद्वि नही हुई है या इससे संबंधित कोई जानकारी नही है या कुछ कह नही सकते हैं। अतः इस सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 84.4**%** लगभग... कों लगता है कि इन दिनों अलीराजपुर जिले में प्राइवेट स्कूलों में वृद्वि हुई है।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 85.9% उत्ततरदाताओं को लगता है कि प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता शासकीय स्कूलों की अपेक्षा अच्छा है।** 14.1**%** उत्ततरदाताओं को लगता है कि प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता शासकीय स्कूलों की अपेक्षा अच्छा नही है या इसके संबंध में कुछ कह नही सकते हैं। अतः इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के (85.9**%** लोगों को लगता है कि प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता शासकीय स्कूलों की अपेक्षा अच्छा है।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 67.4% उत्त्रदाताओं को लगता है कि सरकार आजकल जनजातियों से संबंधित कल्याणकारी योजनाओं की जिम्मेदारी निजी क्षेत्रों को दे रही है।** 32.6**%** लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं को लगता है कि सरकार आजकल जनजातियों से संबंधित

कल्याणकारी योजनाओं की जिम्मेदारी निजी क्षेत्रों को नही दे रही है या इससे संबंधित वे कुछ कह नही सकते हैं। उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 67.4% लोगों को लगता है कि सरकार आजकल जनजातियों से संबंधित कल्याणकारी योजनाओं की जिम्मेदारी निजी क्षेत्रों को दे रही है।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 91.1% उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के बच्चे विद्यालय जाकर औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहें है।** जबकि 8.9% लगभग दसवा भाग उत्तरदाता का कहना है कि उनके परिवार के बच्चे विद्यालय जाकर औपचारिक शिक्षा ग्रहण नही कर रहें है। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 91.1 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवार के बच्चे विद्यालय जाकर औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 17.8% लगभग एक चौथाई उत्तरदाताओं के बच्चे विद्यालय में जाकर विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच इत्यादि) को सिखते है।** तथा 73.3% उत्तरदाताओं के बच्चे विद्यालय में जाकर विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच इत्यादि) को नही सिखते है। उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के बच्चे मात्र 17.8% लगभग एक चौथाई उत्तरदाताओं के बच्चे विद्यालय में जाकर विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच इत्यादि) को सिखते हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 69.6% उत्तरदाताओं का कहना है कि वे अपने बच्चों को पढ़ने के लिए सरकारी स्कूल में भेजते है।** 24.4% उत्तरदाताओं का कहना है कि वे अपने बच्चों को पढ़ने के लिए प्राईवेट स्कूल में भेजते है। इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 24.4% लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए सरकारी स्कूल में भेजते हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 89.6% उत्त्रदाताओं को लगता है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण होने के कारण भीलाला जनजातियों के लिए स्वास्थ्य से संबंधी सेवाएं महंगी होने के कारण पहुँच से बाहर है।** 6.7% कम ही उत्त्रदाताओं को लगता है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण होने के कारण भीलाला जनजातियों के लिए स्वास्थ्य से संबंधी सेवाएं महंगी होने के कारण पहुँच से बाहर नही है। 3.7% नगण्या उत्त्रदाताओं का कहना है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण होने के कारण भीलाला जनजातियों के लिए स्वास्थ्य से संबंधी सेवाएं महंगी होने के कारण पहुँच से बाहर है या नही उसका पता नही है। अत इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 89.6% लोगों को लगता है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में निजीकरण होने के कारण भीलाला जनजातियों के लिए स्वास्थ्य से संबंधी सेवाएं महंगी होने के कारण पहुँच से बाहर है।

- कुल उत्तरदाताओं में से 12.6% लगभग दश्वा भाग उत्तरदाता ही अपने परिवार में किसी के बीमार होने पर उसे केवल सरकारी अस्पताल में ले जाते हैं। (11.1%) लगभग दश्वा भाग

उत्तरदाता केवल नीजि अस्पताल में ले जाते हैं। और 4.4% उत्तरदाता केवल बड़वे या ओझा या झाडफुक वाले के पास ले जाते हैं। लेकिन 49.6% लगभग आधे उत्तरदाता सरकारी अस्पताल एवं बड़वे के पास ले जाते हैं। जबकि 16.2% उत्तरदाता नीजि अस्पताल एवं बड़वे के पास ले जाते हैं। तथा 8.1% उत्तरदाता केवल बड़वे के पास एवं बड़वा और माताजी के पास ले जाते हैं। अतः इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 68% लोग अस्पताल के साथ–साथ बढ़वे एवं माताजी के पास उपचार कराते हैं। इसमें भी 49.6% लगभग लगभग आधे लोग केवल सरकारी अस्पताल एवं बड़वे के पास उपचार कराते हैं। जबकि 30.3% लगभग एक तीहाई लोग केवल नीजि अस्पताल एवं नीजि अस्पताल के साथ–साथ बड़वे के पास तथा नीजि अस्पताल के साथ–साथ सरकारी अस्पताल में जाते हैं।

- कुल उत्तरदाओं में से 28.9% लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं के पास अर्थात् परिवार में किसी न किसी के सधारण मोबाइल फोन है। 38.5% लगभग एक तीहाई से अधिक लोगों के पास आज भी किसी प्रकार का कोई भी संसाधन सुविधा नही है। 32.4% लगभग एक तीहाई लोगों के पास टेलीविजन, टेलीफोन, लेपटॉप या कम्प्यूटर, एंड्रायड फोन एवं टेबलेट इत्यादि संसाधन उनके पास उपलब्ध है। अतः इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 613% लोगों के पास सधारण मोबाइल फोन टेलीविजन, सधारण मोबाइल फोन, लेपटॉप या कम्प्यूटर, एंड्रायड फोन एवं टेबलेट है।
- कुल उत्तरदाताओं में से 82.2%% उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के सदस्य नूडल्स का इस्तेमाल नही करते है। जबकि केवल 17.8% लगभग एक चौथाई उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के सदस्य नुडल्स, पास्ता, बर्गर एवं के.एफ.सी. चिकेन इत्यादि का इस्तेमाल करते है। उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 17.8% लोग नुडल्स, पास्ता, बर्गर एवं के.एफ.सी. चिकेन इत्यादि का इस्तेमाल करते है।

- कुल उत्तरदाताओं में से 14.8% उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के सदस्य उपरोक्त खाद्य पदार्थों को स्थानीय खाना (जैसे–रोटी, दाल, सब्जी इत्यादि) के स्थान पर ज्यादा तरजीह (prefer) करते हैं। 84.4% उत्तरदाता का कहना है कि उनके परिवार के सदस्य उपरोक्त खाद्य पदार्थों को स्थानीय खाना (जैसे–रोटी, दाल, सब्जी इत्यादि) के स्थान पर ज्यादा तरजीह (prefer) नही करते है। 14.8% नगण्य उत्तरदाता को इसके संबंध में किसी प्रकार की कोई जानकारी नही हैं। अतः स्पष्ट है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 84.4% लोग रोटी, दाल एवं सब्जी के स्थान पर दुसरे खाद्य पदार्थों को तरजीह नही करते हैं क्योंके आज भी अधिकतर लोग अपने गांव से बाहर जाना पसंद नही करते हैं। जबकि 14.8% उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार के सदस्य उपरोक्त खाद्य पदार्थों को स्थानीय खाना (जैसे–रोटी, दाल, सब्जी इत्यादि) के स्थान पर ज्यादा तरजीह (prefer) करते हैं क्योंकि ये लोग अपने गांव से बाहर जाते हैं जिसमें कुछ लोग मजदूरी के

लिए जाते है तो कुछ अपने व्यवसाय के कारण अपने गांव से बाहर जाना होता है। तथा कुछ लोग भोजनालय, ढाबा, होटल, ड्राईवर आदि का कार्य करते हैं जिससे ये लोग इन खाद्य वस्तुओं को तरजीह करते हैं लेकिन ये भी कभी–कभी।

- कुल उत्तरदाताओं में से (58.5%) लगभग आधे से अधिक उत्तरदाता का कहना है कि कृषि में मशीन या बीज या उर्वरक या कीटनाशकों का प्रयोग स्थानीय लोगों से बातचीत करके करते हैं। (8.1%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वे रेडियों, टेलीविजन, इंटरनेट, अखबार एवं पत्र–पत्रिकाओं, मोबाईल एप से जानकारी प्राप्त करके कृषि में प्रयोग करते हैं। (33.3%) लगभग एक तीहाई उत्तरदाताओं का कहना है कि स्थानीय लोगों से बातचीत के साथ–साथ रेडियों, टेलीविजन, इंटरनेट, अखबार एवं पत्र–पत्रिकाओं, मोबाईल एप, स्थानीय सरकारी अधिकारियों, एन.जी.ओ. के लोगों से बातचीत करके कृषि में उपयोग होने वाले मशीन या बीज या उर्वरक या कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं। इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि (41.4%) लगभग आधे से कम उत्तरदाता पर का स्थानीय लोगों से बातचीत के साथ–साथ रेडियों, टेलीविजन, इंटरनेट, अखबार एवं पत्र–पत्रिकाओं, मोबाईल एप, स्थानीय सरकारी अधिकारियों, एन.जी.ओ. से सम्पर्क के कारण सूचना संचार एवं नवीन तकनीकी के माध्यम से जानकारी लेकर कृषि में कार्य मशीन या बीज या उर्वरक या कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं।

- **कुल उत्तरदाताओं में से 52.6% लगभग आधे से अधिक उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार या जनजाति के बच्चे डायपर एवं डिब्बाबंद दूध का प्रयोग करते हैं।** तथा 47.4% लगभग आधे से कम उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार या जनजाति के बच्चे डायपर एवं डिब्बाबंद दूध का प्रयोग नही करते हैं। अतः इस सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में लक्ष्मणी गांव के भीलाला जनजाति के 52.6% लगभग आधे से अधिक उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके परिवार या जनजाति के बच्चे डायपर एवं डिब्बाबंद दूध का प्रयोग करते हैं।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भीलाला जनजाति में मूल्यों की व्यवस्था (Value System) परिवर्तित हो गई है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 83 (61.48%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भीलाला जनजाति में मूल्यों की व्यवस्था (Value System) परिवर्तित हो गई है।** इनमें से 47 (56.63%) पुरूष एवं 36 (43.37%) महिला है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 34 (25.19%) उत्तरदाताओं का कहना है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भीलाला जनजाति में मूल्यों की व्यवस्था (Value System) परिवर्तित हो गई है। इनमें 14 (41.18%) पुरूष एवं 20 (58.82%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल (83) 61.48% उत्तरदाताओं का मानना है वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण भीलाला जनजाति में मूल्यों की व्यवस्था (Value System) परिवर्तित हो गई हैं इनमें से 50 (84.75%)

उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें 19 (38.0%) महिलाएं है एवं 31 (62.0%) पुरूष है।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति में इन दिनों अन्तः पीढ़ी एवं अर्न्तपीढ़ीय संघर्ष में बढ़ोत्तरी हुई है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 92 (68.15%) उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति में इन दिनों अन्तः पीढ़ी एवं अर्न्तपीढ़ीय संघर्ष में बढ़ोत्तरी हुई है।** इनमें 51 (55.43%) पुरूष एवं 41 (44.57%) महिलाएं है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 27 (20.0%) उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति में इन दिनों अन्तः पीढ़ी एवं अर्न्तपीढ़ीय संघर्ष में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। इनमें 11 (40.74%) पुरूष एवं 16 (59.26%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 92 (68.15%) उत्तरदाताओं भीलाला जनजाति में इन दिनों अन्तः पीढ़ी एवं अर्न्तपीढ़ीय संघर्ष में बढ़ोत्तरी हुई हैं जिनमें से 52 (88.14%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें 32 (61.54%) पुरूष एवं 20 (38.46%) महिलाएं है।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, इन दिनों परिवारों में महिला एवं पुरूष दोनों नौकरी करने जाते हैं वृद्धों के देखभाल (Care) से संबंधित समस्याएं बढ गई है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 97 (71.85%) उत्तरदाताओं का कहना है कि इन दिनों परिवारों में महिला एवं पुरूष दोनों नौकरी करने जाते हैं जिससे वृद्धों के देखभाल (Care) से संबंधित समस्याएं बढ गई है। इनमें 51 (52.68%) पुरूष एवं 46 (47.42%) महिलाएं है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 23 (17.04%) उत्तरदाताओं का कहना है कि इन दिनों परिवारों में महिला एवं पुरूष दोनों नौकरी करने जाते हैं जिससे वृद्धों के देखभाल (Care) से संबंधित समस्याएं नही बढी है। इनमें 09 (39.13%) पुरूष एवं 14 (60.87%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 97 (71.85%) उत्तरदाताओं का मानना है इन दिनों परिवारों में महिला एवं पुरूष दोनों नौकरी करने जाते हैं वृद्धों के देखभाल (Care) से संबंधित समस्याएं बढ गई है इनमें से 53 (89.83%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें 32 (60.38%) पुरूष एवं 21 (39.62%) महिलाएं है।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा ज्यादा सशक्तिकृत हुई है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल (83) 61.48% उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा ज्यादा सशक्तिकृत हुई है।** इनमें 45 (54. 22%) पुरूष एवं 38 (45.78%) महिलाएं है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 43 (31.85%) उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा ज्यादा सशक्तिकृत हुई है। इनमें से 20 (46.51%) पुरूष एवं 25 (53.49%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं

की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 83 (61.48%) उत्तरदाताओं भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा ज्यादा सशक्तिकृत हुई है जिनमें 43 (72.88%) उत्तरदाताओं की आयु 20 से 40 वर्ष हैं। इनमें 24 (55.81%) पुरूष एवं 19 (44.19%) महिलाएं है।

- विभिन्न आयु एवं लिंग के उत्तरदताओं के अनुसार, भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision making proces) में ज्यादा भाग ले रही है से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। **आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पता चलता है कि कुल 76 (56.30%) उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision making process) में ज्यादा भाग ले रही है।** इनमें 42 (55.26%) पुरूष एवं 34 (44.74%) महिलाएं है। कुल 135 उत्तरदाताओं में से 51 (37.78%) उत्तरदाताओं का कहना है कि भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision making proces) में ज्यादा भाग नहीं ले रही है। इनमें 23 (45.10%) पुरूष एवं 28 (54.30%) महिलाएं है। उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि कुल 76 (56.30%) उत्तरदाताओं का मानना है कि भीलाला जनजाति की महिलाएं पूर्व की अपेक्षा निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision making proces) में ज्यादा भाग ले रही है उनमें से 41 (69.49%) उत्तरदाता की आयु 20 से 40 वर्ष है। इनमें 24 (58.54%) पुरूष एवं 17 (41.46%) महिलाएं है।

इस प्रकार सम्पूर्ण तथ्यों के अध्ययन के परिणामस्वरूप शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहूंचा है कि भीलाला जनजाति के लोगों के सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर वैश्वीकरण का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ा है।